ISSN (Online): 2583-5777 पूर्वोत्तर प्रभा, वर्ष-3, अंक-1 (जनवरी-जून, 2023)

पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

बदरी विशाल पित्ती की 'कल्पना'

डॉ. गोरख नाथ तिवारी

सह आचार्य, हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय

ईमेल : gorakh2613@gmail.com

शोध सार : भाषा एवं साहित्य के विकास में 'कल्पना' हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका रही है जिसने अपने कलेवर और प्रकाशन के क्षेत्र में हिंदी साहित्य में अभूतपूर्व योगदान दिया। महान उदारवादी छवि वाले बदरी विशाल पित्ती जी ने इसे तीन दशकों तक प्रकाशित कर समूचे साहित्य जगत में अमिट छाप छोड़ने का साहस किया। दक्षिण भारत के हैदराबाद से प्रकाशित इस पत्रिका का साहित्यिक अवदान बहुत अधिक रहा है जो इस पत्रिका में एक बार छप जाता था । वह लेखक के रूप में देश उसे जानने लगता था। इस पत्रिका के संपादकों ने विशुद्ध रूप से नवीनतम सामग्री पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जो सदा प्रासंगिक बनी रही। हिंदी साहित्य में 'कल्पना' का अवदान आने वाले पचास वर्षों के बाद भी पाठकों और लेखकों के मानस पटल पर चित्रांकित रहेगा।

बीज शब्द : कल्पना, भारतीय संस्कृति के पुजारी,शरद पित्ती, हिंदी साहित्य, हैदराबाद।

मूल आलेख : श्री बदरी विशाल पित्ती जी का जन्म कोलकाता में 28 मार्च, 1928 को हुआ। आपकी संपूर्ण शिक्षा हैदराबाद में संपन्न हुई। 14 वर्ष की अवस्था से 'भारत छोड़ो आंदोलन' में वे कूद पड़े और सक्रिय रूप से आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। हैदराबाद के निजाम शासन का भी आपने डटकर विरोध किया और भारत में हैदराबाद राज्य को विलय करवाने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। निजाम सरकार का विरोध करना उस समय प्राण दंड का प्रावधान था परंतु इसकी परवाह आपने कभी नहीं किया। निजाम सरकार से लोहा लेने पर भूमिगत हो गए, भूमिगत रहकर ही रेडियो प्रसारण केंद्र की स्थापना आपने की।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय पित्ती जी की भेंट डॉ. राममनोहर लोहिया से हुई और लोहिया जी के आदर्शों का प्रभाव आप पर पड़ा। लोहियावादी विचारधारा से जीवनपर्यंत आप जुड़े रहे। हैदराबाद के

महाराजगंज विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से संसोपा के टिकट और 'बरगद के चुनाव चिह्न पर एम.एल.ए. के प्रत्याशी के रूप में खड़े हुए और भारी मतों से आप विजयी हुए। पित्ती जी समाजवादी पार्टी के कार्यकारिणी समिति के आजन्म सदस्य बने रहे। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह, चंद्रशेखर, कृष्णकांत, देवीलाल, एन. संजीव रेड्डी, कर्पूरी ठाकुर, जार्ज फर्नांडिज, जनेश्वर मिश्र आदि आपके मित्र थे। स्त्रियों की शिक्षा पर उस समय ध्यान नहीं दिया जाता था ऐसे में श्री बदरीविशाल जी के पिता जी राजा पन्नालाल पित्ती जी और उनके दादाजी राजा वंशीलाल पित्ती जी ने कन्या विद्यालय की स्थापना सन् 1948 में कर स्त्रियों को शिक्षित करने के कार्य में लग गए। आज इस विद्यालय को स्त्री सशक्तीकरण के रूप में देशभर में आदर पूर्वक जाना जाता है। इस विद्यालय के अध्यापक और आचार्य पंडित मधुसूदन चतुर्वेदी थे। चतुर्वेदी जी बदरी विशाल के अध्यापक रहे। जब 'कल्पना' का प्रकाशन आरंभ हुआ तो चतुर्वेदी जी उसके प्रकाशक तथा संपादक मंडल के सदस्य भी बने। पित्ती जी का संपूर्ण परिवार सदियों से समाज, साहित्य, संस्कृति तथा कला के पोषक रहे हैं।

पित्ती जी हिंदी साहित्य के प्रकांड विद्वान, भारतीय संस्कृति के पुजारी, राजनीति के युग दृष्टा, समाज सेवा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करने वाले की छवि रही है। हैदराबाद में ही नहीं अपितु संपूर्ण देश में विलक्षण प्रतिभा के धनी पित्ती जी बहुआयामी व्यक्तित्व वाले महान व्यक्तित्व थे। भारतीय संस्कृति के रक्षक और राष्ट्रीयता के पोषक थे। 'कल्पना' पत्रिका के द्वारा हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में कीर्तिमान स्थापित करने वाले पित्ती जी युग प्रवर्तक थे। वे एक साथ उद्योगपति, कलाप्रेमी, संगीत प्रेमी, चित्रकला प्रेमी, साहित्य प्रेमी, समाजसेवी, कुशल राजनीतिज्ञ, विभिन्न संस्थाओं के संस्थापक, श्रमिक नेता, बुद्धिजीवी लेखक एवं प्रखर संपादक थे। हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के इतिहास में 'कल्पना' का योगदान अद्वितीय है।

'कल्पना' पत्रिका के माध्यम से बदरी विशाल जी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की परंपरा को अक्षुण्ण रखा। सन् 1920 में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी भाषा की वर्तनी को शुद्ध 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से किया। उसी परंपरा का निर्वाह करते हुए बदरी विशाल पित्ती ने 'कल्पना' पत्रिका के माध्यम से सृजनशील साहित्य के विकास में लगे और हिंदी भाषा के व्याकरण, लिपि तथा वर्तनी संबंधी त्रुटियों को सुधारने का प्रयास वे निरंतर करते रहे।

सन् 1949 ई. में पित्ती जी ने 'कल्पना' का प्रकाशन द्विमासिक के रूप में शुरू किया। बाद में यानि 1952 से यह पत्रिका मासिक पत्रिका बनी। इसका उद्देश्य ग्राहकों का मनोरंजन करके धनोपार्जन करने के उद्देश्य से प्रकाशित नहीं किया गया अपितु उसका एकमात्र लक्ष्य था कि राजभाषा हिंदी के स्तर को ऊपर उठाना। 'कल्पना' का आदर्श यह होता था कि इस पत्रिका में प्रकाशित कोई भी अंश कभी पुराना न लगे। आज भी 'कल्पना' में प्रकाशित सामग्री की उपयोगिता और प्रासंगिकता देखी जा सकती है। प्रवेशांक 15अगस्त 1949 ई. के संपादकीय में कहा गया- 'कल्पना' हिंदी पत्रिकाओं की संख्या वृद्धि अथवा ग्राहकों

का मनोरंजन करके धनोपार्जन करने के उद्देश्य से नहीं निकाली गई। एक मात्र ध्येय हिंदी के स्तर को ऊँचा करना है। .....आदर्श यह रहेगा कि 'कल्पना' का कोई अंक उसका कोई अंश कभी पुराना न हो। आज से पचास वर्ष बाद भी उसकी उपयोगिता और आकर्षण वही रहे जो आज है।''[1]

प्रो. आर्येंद्र शर्मा, श्री भवानी प्रसाद मिश्र, श्री रघुवीर सहाय, श्री प्रयाग शुक्ल, प्रो. रंजन, 'कल्पना' के यशस्वी संपादकों की एक सक्रिय परंपरा दिखाई देती है जैसे- श्री मधुसूदन चतुर्वेदी, ओमप्रकाश निर्मल, राजा दूबे, श्रीराम शर्मा, बदरी विशाल पित्ती, मुनींद्र जी, श्री मणिमधुकर, श्री जगदीश मित्तल जैसे मूर्धन्य संपादकों ने बड़ी ही निष्ठा और समर्पण भाव से इसको संपादित करते थे। इस साहित्यिक पत्रिका ने देश भर में ऐसी छवि और आदर्श साहित्य के क्षेत्र में प्रस्तुत की जो आज भी प्रासंगिक है। इस प्रकार की पत्रिका का प्रकाशन 'न भूतो न भविष्यति' में कभी नहीं हो सकेगा। यह हमारे देश का परम सौभाग्य है कि 'राज परिवार में जन्मे बदरी विशाल पित्ती जिन्हें साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में अवतारी पुरुष कहना अधिक उचित होगा जिन्होंने 'कल्पना' पत्रिका के माध्यम से समूचे देश में एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित किया जो आज भी कायम है। इस पत्रिका के प्रवेशांक 15 अगस्त, 1949 ई. में प्रकाशित हुआ जिसमें वासुदेवशरण अग्रवाल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राहुल सांकृत्यायन, चंद्रबली पांडेय, प्रभाकर माचवे, सरोजनी नायडू, कमला देवी चट्टोपाध्याय और बदरीविशाल पित्ती थे। प्रथम दो वर्षों में हिंदी के 119 लेखकों की 241 रचनाएँ प्रकाशित हुईं। अज्ञेय, अंचल, दिनकर, बच्चन, महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत आदि कवियों का योगदान रहा। नंद दुलारे वाजपेयी का निबंध 'कोश निर्माण' पत्रिका की रचनात्मक दृष्टि को अत्यधिक पुष्ट और प्रभावित किया। पत्रिका के तीसरे वर्ष 1952 में देशी-विदेशी 148 लेखकों की 203 रचनाएँ और 927 पृष्ठों में प्रकाशित की गई। पत्रिका के चौथे वर्ष में 162 लेखकों को पत्रिका ने प्रकाशित किया। अमरकांत, जगदीश बहादुर सिंह और केशवचंद्र शर्मा सन् 1953 में 'कल्पना' में लेखन कार्य करने लगे। कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, मनू भंडारी, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, हृदयेश, विवेकी राय आदि कथाकारों की रचनाएँ 1955-56 में कल्पना' में प्रकाशित होती रही। इस वर्ष नए साहित्यकारों का जुड़ाव भी हुआ जिसमें अज्ञेय, कीर्ति चौधरी, कुंवर नारायण, दुष्यंत कुमार, भारत भूषण अग्रवाल, मलयज, श्रीकांत वर्मा और रघुवीर सहाय। 1959 में पत्रिका का 100 वाँ अंक पूर्ण होने पर प्रथम विशेषांक कल्पना के सौ अंक प्रकाशित हुआ। धर्मवीर भारती अजित कुमार, अश्क, मार्कंडेय, लक्ष्मीनारायण लाल और उदयशंकर भट्ट ने इसी वर्ष लेखन का कार्य 'कल्पना' में शुरू किया।

सन् 1960 में राजकमल चौधरी, दूधनाथ सिंह, गजानन माधव मुक्तिबोध, मुद्राराक्षस आदि ने इसमें लेखन शुरू किया। 1963 में पत्रिका की ओर से प्रथम परिसंवाद योजना कार्यान्वित हुई। विषय था 'आधुनिक साहित्य बोध' और संयोजक थे कुंवर नारायण तथा कृष्णनाथ भाग लेने वाले हजारी प्रसाद द्विवेदी, धर्मवीर भारती डॉ. देवराज, अज्ञेय और नामवर सिंह। इस परिसंवाद से पत्रिका के साहित्यिक स्वरूप में और निखार आई। सन् 1968 में सुरेंद्र वर्मा, असगर वजाहत, निर्भय मल्लिका का 'कल्पना' में स्वागत

हुआ। जब कोई नया लेखक 'कल्पना' में छपता था तो 'कल्पना' स्वागत करती थी। इस वर्ष उग्र जी, राजकमल चौधरी, नंददुलारे वाजपेयी, शांतिप्रिय द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी और राममनोहर लोहिया के निधन पर शोक प्रकट किया गया। मेहरुन्निसा परवेज, मुक्ता शुक्ल, कुंतल गोयल, आशारानी बोहरा और प्रेमलता वर्मा जैसी नारी लेखिकाओं को इस वर्ष पत्रिका ने स्थान दिया। 1968 में 'कल्पना' के व्यवस्थापक-संपादक श्री बदरी विशाल पित्ती तेलंगाना आंदोलन के सिलसिले में कई मास तक नजरबंद रहे और अस्त व्यस्त होते हुए भी इस पत्रिका का प्रकाशन सुचारू ढंग से होता रहा। अगस्त 1969 में 'नवलेखन विशेषांक' 200 पृष्ठों में प्रकाशित किया गया। विशेषांक के अतिथि संपादक डॉ. शिव प्रसाद सिंह रहे। इस पत्रिका में निराला, दिनकर, कृष्णा सोबती, चंद्रकांता आदि ने 'कल्पना' पत्रिका में लेखन कार्य शुरू किया। सुप्रसिद्ध कथाकार चंद्रकांता जी बदरीविशाल पित्ती को 'छेड़ दो तो बहती हैं यादें' शीर्षक से लिखती हैं कि- "हैदराबाद की ऋणी मैं, 'कल्पना' पत्रिका और उनके संपादक मंडल की सबसे पहले हूँ। श्री बदरी विशाल पित्ती और उनकी 'कल्पना' तब पूरे हिंदी जगत में सम्मान पा चुकी थी। बड़े से बड़ा रचनाकार 'कल्पना' में छपने को लालायित रहता था।''2

उपरोक्त कथन से एक बात हमारे सामने स्पष्ट हो जाती है कि बदरी विशाल पित्ती देश के एक मात्र ऐसे मूर्धन्य साहित्यकार और पत्रकार थे जिन्होंने देशभर में लेखकों को तराशकर लेखक बनाया। देश के कोने-कोने से नए-नए साहित्यकारों को तराशने में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। लगभग तीन दशकों तक हिंदी साहित्य के ऊपर 'कल्पना' का राज रहा।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विवेकी राय 'कल्पना' में कई वर्षों तक लेखन का कार्य करते रहे। जब भी पित्ती जी बनारस जाते थे, वहाँ पर डॉ. राय से मुलाकात होती थी। वे कहते भी हैं कि- "उच्च कोटि का व्यवहार और संस्कारवान व्यक्तित्व था बदरी विशाल जी का, वे सच्चे अर्थों में राजा थे, महापुरुष भी और अवतारी पुरुष भी जो उनसे एक बार मिलता था उनका ही होकर रह जाता था, वे इतने सौम्य और इतने मृदुल कि क्या पूछना? कोई शब्द नहीं हैं उनके लिए। 'कल्पना' का महत्व एक अलग था। खुले विचार की पत्रिका थी। राष्ट्रीय और प्रखर स्वर था। भारतीय एकता और अखंडता का सूत्रपात करने में 'कल्पना' और राजा बदरी विशाल पित्ती को महत्वपूर्ण भूमिका रही है।"[3] डॉ. विवेकी राय जी का बदरी विशाल जी के साथ जीवनपर्यंत मित्रता बना रहा। अतः डॉ. राय ने पित्ती जी के व्यक्तित्व पर जो बात हमारे सामने प्रस्तुत किया उसे बड़ी बात कही जा सकती है।

बदरी विशाल पित्ती जी के व्यक्तित्व के बारे में प्रो. टी. मोहन सिंह 'संकल्य' की अपनी संपादकीय में लिखते हैं कि, ''उदार व्यक्तित्व के धनी श्री बदरी विशाल पित्ती जी ने एक सपंन्न परिवार में जन्म लेकर भी श्रमजीवियों की सहायता की थी।..... यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि बदरी विशाल पित्ती जी का व्यक्तित्व हिंदी के लिए एक वरदान था। भारतीयता विनयशीलता राजा बदरी विशाल पित्ती जी के व्यक्तित्व

में कूट-कूट कर भरी थी। इसलिए भारतीय संस्कृति, शास्त्रीय संगीत, नृत्य एवं ललित कलाएँ उनके जीवन का अभिन्न अंग थी। स्त्री शिक्षा के पक्षधर वे जीवंत और जिंदादिल इंसान थे।''[4]

मेरा तो सिर्फ इस लेख के माध्यम से युवा पीढ़ी के लेखकों, संपादकों तथा साहित्य से प्रेम रखने वाले हिंदी प्रेमियों तथा हम उम्र के पाठकों को पित्ती जी के बारे में जानकारी कराना है। 'कल्पना' के दौर में धर्मयुग, सारिका, हिंदुस्तान, आजकल. ज्ञानोदय, प्रतीक और नया प्रतीक जैसी पत्रिकाएँ प्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा संपादित होती रहीं लेकिन जो बात इस अहिंदी भाषी क्षेत्र हैदराबाद से प्रकाशित होने वाली 'कल्पना' की थी वह किसी अन्य पत्रिकाओं में नहीं रही। वास्तव में 'कल्पना'का हिंदी साहित्य के विकास यात्रा में बहुत योगदान रहा है।

दिनकर की 'उर्वशी' की चर्चा जो कल्पना पत्रिका में हुई थी उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है? ऐसे ही आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास 'अनामदास का पोथा' धारावाहिक रूप से 'कल्पना' में ही सबसे पहले प्रकाशित हुई थी। जिसे पाठकों ने सर माथे लिया।

तीन दशकों तक हिंदी साहित्य के सामने सर्वश्रेष्ठ रही 'कल्पना' पत्रिका को हिंदी साहित्य में पत्रकारिता जगत का 'नवनीत' कहा गया है। सन् 1978 ई. में 'कल्पना' का प्रकाशन सदा के लिए बंद हो गया। इस घटना ने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता जगत को झकझोर कर रख दिया। 'कल्पना' के मालिक रहे श्री पित्ती जी जीवनपर्यंत इस पत्रिका के बंद होने पर वे बहुत ही दुःखी थे। वे चाहते थे कि पत्रिका निरंतर चलती रहे लेकिन इसके योग्य उन्हें कोई प्रधान संपादक मिला ही नहीं। इस युग पुरुष का निधन 6 दिसंबर 2003 को हैदराबाद में हुआ। आपके निधन से न केवल हिंदी साहित्य अपितु हिंदी प्रेमी प्रकांड विद्वान संपादक के लिए शोकाकुल हो गए।

डॉ. शशिकांत मिश्र बदरी विशाल पित्ती जी के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं- ''पित्ती जी ने अपना संपूर्ण जीवन देश की सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक विकास के लिए लगा दिया। पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय है।.... वे एक महान चिंतक, समाज सेवी, साहित्यकर्मी, संस्कृति प्रेमी, सुलझे हुए लोहियावादी चिंतक थे। हैदराबाद का सांस्कृतिक, साहित्यिक और औद्योगिक जगत बदरी विशाल पित्ती जी के पिता जी राजा पन्नालाला पित्ती जी और उनके पितामह राजा वंशीलाल पित्ती जी का ऋणी रहेगा।''[5]

'कल्पना' पत्रिका हिंदी साहित्य की अनमोल पत्रिका थी जिसका नाम संपूर्ण देश में था, पाठकगण इसे पढ़ने के लिए बेसब्री से इंतजार किया करते थे। इससे पत्रिका की कीर्ति का पता चलता है। प्रयाग शुक्ल लिखते हैं कि- ''कल्पना' पत्रिका में मैं जब पहुँचा था तो उसके मानकों की उसकी गंभीरता और सुरूचि की चारों ओर कीर्ति फैल चुकी थी- केरल, गोवा और देश के कई अन्य क्षेत्रों के पुस्तकालयों तक उसकी

पहुँच थी। 'कल्पना' स्वयं अहिंदी भाषी क्षेत्र से निकलती थी, पर हिंदी भाषी क्षेत्रों पर भी उसकी पकड़ सबसे मजबूत थी।''[6]

बदरी विशाल पित्ती जी के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा धार्मिक कार्यों को उनके सुपुत्र श्री शरद पित्ती जी बड़ी ही उदारता और निष्ठापूर्वक अपने बाबूजी के कार्यों को राष्ट्रव्यापी ढंग से आज भी कर रहे हैं। शरद जी के एकलौते सुपुत्र श्री अक्षय पित्ती जी भी अपने दादाजी के पद चिह्नों का बखूबी अनुसरण कर इस प्रकार के पुनीत कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। शरद जी के द्वारा किया हुआ यह कार्य प्रशंसनीय और वंदनीय है। इनके मधुर प्रयास से ही देशभर से संगीतकारों को प्रत्येक वर्ष अपने पारिवारिक मंदिरों में और देवालयों में, नृत्योत्सव कराने की परंपरा आज भी जारी हैं। मेडिकल कैंप के माध्यम से दीन-दुखियों का इलाज शरद पित्ती जी के आर्थिक सहायता से करवाया जाता है। प्रत्येक वर्ष इस सामाजिक कार्यों हेतु करोड़ों रुपए वे समाज के लिए, दीन-दुखियों पर खर्च करते हैं।

कोविड महामारी के समय बदरी विशाल जी के सुपुत्र शरद पित्ती जी ने कोविड के टीके हजारों की संख्या में लोगों को लगवाया वह भी निःशुक्ल रूप से। वे आज भी समर्पण भाव से समाज की सेवा कर रहे हैं। शरद जी जैसा संस्कारी सुपुत्र अगर किसी के पास हों तो भला क्या पूछना है? अपने पिताजी के दिखाए हुए मार्ग का वे सदा अनुसरण करते हैं। हैदराबाद के उनके निवास पर साहित्यिक व्याख्यान और प्रीतिभोज हर समय होता रहता है। कई साहित्यिक आयोजनों में मेरी भी सहभागिता रही है। मेरे नाना जी स्व. मधुसूदन चतुर्वेदी जी और प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी जी का पित्ती परिवार से जो अपनापन और पारिवारिक संबंध था उसे अभिव्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। वही संबंध आज भी शरद जी जानते और मानते हैं।

'कल्पना' पत्रिका हिंदी साहित्य के लिए 'मील का पत्थर' साबित हुई है। आज के संदर्भ ऐसी पत्रिका का प्रकाशन होना मुश्किल है। 'कल्पना' अब हम सबके मन मस्तिष्क में सदा विद्यमान रहेगी। इस संदर्भ में डॉ. विवेकी राय लिखते हैं कि ''निःसंदेह हिंदी-साहित्य के लिए बदरी विशाल पित्ती की एक महत्तम और ऐतिहासिक देन का नाम 'कल्पना' है।''[7]

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि जिस प्रकार से हिंदी साहित्य में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन कर कीर्तिमान स्थापित किया उसी प्रकार से दक्षिण भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण देश में 'कल्पना' का प्रकाशन करके बदरी विशाल जी ने एक नया कीर्तिमान रचा। वह ऐसा कीर्तिमान है जो साहित्यकारों और देश के पाठकों के मानस पटल पर सदैव चित्रांकित रहेगा।

संदर्भ सूची

1. विवेकी.डॉ. राय, कल्पना और हिंदी साहित्य, पृ.9, अनिल प्रकाशन, आलोपीबाग कॉलोनी, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2009

2.शुक्ल प्रयाग बदरीविशाल, (सं.) पृ.97, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, प्रथम संस्करण, 2014

3.विवेकी.डॉ. राय,कल्पना और हिंदी साहित्य, पृ.9, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, प्रथम संस्करण, 2009

4.मोहन .प्रो. टी. सिंह संपादकीय, हिंदी पत्रिकारिता का इतिहास और स्व. बदरी विशाल पित्ती जी, 'संकल्य' (त्रै.), जनवरी-मार्च, 2018, पृ.6

5.मिश्र.डॉ. शशिकांत 'कल्पना' की ऊँची उड़ान के शिल्पी : बदरी विशाल पित्ती, 'संकल्य' (त्रै.), जनवरी-मार्च, 2017, पृ.11

6.विवेकी.डॉ. राय.बदरी विशाल, भूमिका, पृ.14, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर प्रकाशन, प्रथम संस्करण-2014

7.विवेकी.डॉ. राय.कल्पना और हिंदी साहित्य, पृ.110, अनिल प्रकाशन, आलोपी बाग, इलहाबाद, प्रथम संस्करण, 2009